अधिक पाँच या छः सहायक कर्मचारियों की क्रियाओं पर नियन्त्रण रख सकता है। वैसे व्यवसाय के प्रकृति तथा आवश्यकतानुसार नियन्त्रण क्षेत्र के विस्तार में परिवर्तन किया जा सकता है।

(10) सन्तुलन का सिद्धांत (Principle of Balance)
संगठन के विभिन्न इकाइयों में परस्पर सन्तुलन रखा जाना चाहिए। अर्थात एक इकाई के अधिकार और उत्तरदायित्व कहीं अधिक और किसी दूसरे से कम न हो जाएं।

(11) नीति की एकरूपता का सिद्धांत (Principle of Homogeneous Policy)
नीति लिखित एवं स्पष्ट होनी चाहिए जिससे प्रत्येक व्यक्ति एक ही अर्थ में समझे तथा एक ही रूप में क्रियान्वित करे।

(12) अभिप्रेरणा का सिद्धांत - (Principle of Motivation)
संगठन इस प्रकार होना चाहिए कि प्रबन्धक उत्साह एवं लगन से उपक्रम के कार्य को बढ़ा सके एवं सही नेतृत्व कर सकें। अभिप्रेरणा के अभाव में संगठन सही लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकता है।

अन्त में हमें कहना यही उचित होगा कि प्रत्येक व्यवसाय का संगठन व्यवसाय की प्रकृति के अनुसार अलग-अलग होता है। इसलिए सभी व्यवसाय में संगठन के सिद्धान्त को सामान्य रूप में लागू नहीं किया जा सकता। संगठन के सिद्धान्तों को उनकी आवश्यकतानुसार अपनाना चाहिए ठीक उसी प्रकार जैसे एक डाक्टर मरीज की बीमारी के अनुकूल इलाज करता है।

प्रो० अजीत कुमार सिंह
वाणिज्य विभाग
स्व० नाo सिंह राम कुमार सिंह
महाविद्यालय, सहरसा

Scanned with CamScanner

और यदि सम्भव हो तो, इस कार्य को भी कई उपभागों में बाँटकर विभिन्न व्यक्तियों को सौंपना चाहिए।

④ समन्वय का सिद्धांत - (Principle of Co-ordination)
संगठन का उद्देश्य उपक्रम के विभिन्न साधनों तथा विभिन्न व्यक्तियों की क्रियाओं में परस्पर समन्वय स्थापित करना है। ऐसी व्यवस्था का निर्माण किया जाय कि विभिन्न क्रियाएँ स्वयं ही एक दूसरे से समायोजित हो जाय।

⑤ अधिकार का सिद्धांत - (Principle of Authority) -
किसी भी संगठित समूह में उच्च अधिकारी होते है। सर्वोच्च अधिकारी को चाहिए कि वह अपने अधीन अधिकारियों एवं कर्मचारियों को जो आदेश दे या जो सूचना वह उनसे प्राप्त करना चाहे, उसके लिए वह पद श्रेणी क्रम (Line of authority) का ही अनुसरण करे।

⑥ उत्तरदायित्व का सिद्धान्त - Principle of Responsibility)
किसी भी अधिकारी को अधिकार सौंपने के साथ-साथ उत्तरदायित्व का वितरण भी स्वयं हो जाता है। वस्तुतः में अधिकार और उत्तरदायित्व एक ही सिक्के के दो पहलू है। फिर भी प्रत्येक कर्मचारी को यह स्पष्ट रूप से मालूम हो जाना चाहिए कि वह अपने कार्य के सम्बन्ध में किन लोगों के प्रति उत्तरदायी है और उनका उत्तरदायित्व किस सीमा तक है।

⑦ व्याख्या का सिद्धान्त - (Principle of Defination) -
प्रत्येक पदाधिकारी के कर्तव्यों, अधिकारों तथा दायित्वों की स्पष्ट व्याख्या होनी चाहिए। यह व्याख्या लिखित रूप में होनी चाहिए ताकि निश्चितता रह सके।

⑧ अनुरूपता का सिद्धांत - (Principle of correspondence) -
अधिकारों व दायित्वों में अनुरूपता होनी चाहिए। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि विभिन्न पदाधिकारियों के अधिकार एक-दूसरे से टकराएँ नही, क्यों कि इससे अनुशासन के भंग होने का भय रहता है।

⑨ नियंत्रण का विस्तार क्षेत्र - (Span of Control) -
संगठन की कार्यकुशलता के लिए पदाधिकारी के नियंत्रण क्षेत्र सीमित होना चाहिए। क्यों कि एक व्यक्ति अपने

Scanned with CamScanner

B.Com. Ist Part के student के लिए

संगठन (organisation)

संगठन का अर्थ (Meaning of organisation)

संगठन, जब दो या दो से अधिक व्यक्ति किसी उपक्रम में साथ-साथ कार्य करते हैं तो इन व्यक्तियों के मध्य कार्य बाँटने की आवश्यकता होती है इसी का नाम संगठन है और यहीं से संगठन की क्रिया शुरू होता है। organisation शब्द की रचना organ से हुई है। organ शब्द के अर्थ हैं ① शरीर के विभिन्न अंग अथवा हिस्सा ② संगीत, बाजा अथवा वाद्य (Musical instrument) मानव शरीर की रचना संगठन का सबसे अच्छा उदाहरण है मानव शरीर में अनेक अंग (organ) होते हैं तथा प्रत्येक अंग या भाग का एक नियत कार्य होता है जैसे मुख का काम खाना, पेट का पचाना, आँख का देखना, कान का सुनना और नाक का सूंघना इत्यादि। लेकिन विभिन्न अंगों के अतिरिक्त मानव शरीर के मस्तिष्क में एक केन्द्रीय विभाग भी होता है जो समस्त क्रियाओं का नियोजन करता है, विभिन्न विभागों का निर्देशन एवं संचालन करता है तथा उनपर पर्याप्त नियंत्रण रखता है। "विभिन्न विभागों में प्रभावपूर्ण समन्वय स्थापित करने की कला को ही वाणिज्य की भाषा में संगठन कहते हैं। मानव शरीर की भाँति व्यवसायिक संस्था के भी अनेक अंग अथवा विभाग होते हैं जो एक दूसरे से सम्बन्धित होते हैं इन विभिन्न विभागों में प्रभावपूर्ण समन्वय स्थापित करना ही संगठन कहलाता है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि संगीत वाद्य के विभिन्न पुर्जे का आयोजन सही ढंग से करने पर मधुर संगीत की स्वर लहरी सुनायी देती है ठीक इसी प्रकार वही व्यवसायिक संस्था सफलता प्राप्त कर सकती है जिसका संगठन स्वस्थ हो। संगठन की परिभाषा विभिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से किये हैं।

Ajanta Milky

Scanned with CamScanner

एल. एच. हैने के अनुसार - "किसी सामान्य उद्देश्य की प्राप्ति के लिए विशिष्ट अंगों का मैत्रीपूर्ण संयोजन ही संगठन है।"

"Organisation is a harmonious adjustment of specialised parts for accomplishment of some common purpose"

लैंसबर्ग एवं स्प्रीगल के अनुसार - संगठन किसी उपक्रम के विभिन्न घटकों के बीच संरचनात्मक सम्बन्ध होता है।

"Organisation is the structural relationship between the various factors in an enterprise"

उपर्युक्त परिभाषाओं के विवेचना के आधार पर हम संगठन की परिभाषा इस प्रकार दे सकते हैं -

" उत्पादन के विभिन्न साधनों जैसे भूमि, श्रम, पूँजी और साहस की युक्तिपूर्ण व्यवस्था करना और प्रभावपूर्ण सहकारिता स्थापित करना ही संगठन है।"

संगठन के सिद्धांत (Principles of organisation)

संगठन स्वयं में एक साध्य नहीं है बल्कि साध्य को प्राप्त करने का एक साधन मात्र है। इसलिए संगठन में उन सभी तरीकों या सिद्धांतों का प्रयोग किया जाता है जो कि निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक हो।

① उद्देश्य की एकरूपता का सिद्धान्त : (unity of objective)
संगठन इस प्रकार का होना चाहिए कि वह स्वयं और उसके सब विभाग, उपक्रम के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु एकजुट रह सके।

② उचित विभागीयकरण - (Proper Departmentalisation)
एक मजबूत संगठन के लिए व्यवसायिक कारोबार को छोटी-छोटी क्रियाओं में बाँटकर उनके उचित विभाग बना देने चाहिए जो उपक्रम में की जाने वाली क्रियाओं को सबसे अधिक कुशल ढंग से सम्पन्न कर सके।

③ विशिष्टीकरण का सिद्धान्त : (Principle of Specialisation)
विशिष्टीकरण के अन्तर्गत एक ही व्यक्ति को अनेक कार्य न देकर एक ही कार्य देना चाहिए

Scanned with CamScanner